International Journal of Applied Research 2019; 5(7): 116-118

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2019; 5(7): 116-118
www.allresearchjournal.com
Received: 28-05-2019
Accepted: 30-06-2019

सुनिता पी
शोध छात्रा, दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा, ऐश्वकुलम, धारवाड़, कर्नाटक, भारत

Correspondence
सुनिता पी
शोध छात्रा, दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा, ऐश्वकुलम, धारवाड़, कर्नाटक, भारत

कविता में स्वच्छंदतावाद विषय के आधार पर कामायनी में प्रकृति चित्रण की प्रासंगिकता

सुनिता पी

स्वच्छंदतावाद (Romanticism) कला, साहित्य तथा बौद्धिक क्षेत्र का एक आन्दोलन था, जो यूरोप में 18 वीं शताब्दी के अंत में आरंभ हुआ | 1900 से 1950 तक के काल में यह आन्दोलन अपने चरमोत्कर्ष पर था | 18 वीं सदी से आज तक दर्शन, राजनीति, कला, साहित्य और संगीत को गहराई से प्रभावित करने वाले वैचारिक रुझान स्वच्छंदतावाद को एक या दो पंक्तियों में परिभाषित करना मुश्किल है | कुछ मानवीय प्रवृत्तियों का पूरी तरह से निषेध और कुछ को बेहद प्राथमिकता देने वाला यह विचार निर्गुण के ऊपर सगुण अमूर्त के ऊपर मूर्त और समग्र मानवता के ऊपर विशिष्ट समुदाय या राष्ट्र को तरजीह देता है| फ्रांसीसी क्रांति का युग प्रवर्तक नारा 'समानता, स्वतन्त्रता और बंधुत्व'को अरसे तक स्वच्छंदतावावादियों का प्रेरणा स्रोत बना रहा |

इस क्रांति के बौद्धिक नायक ज्यां – जाक रुसो को स्वच्छंदतावादी चिंतन की शुरुआत का श्रेय दिया जाता है | 1761 में प्रकाशित रूसो की दीर्घ औपन्यासिक कृति 'ज्यूली और दन्यू हेलोइस'अपनी आत्मकथा कन्फेशंन्स इस महान विचारक के स्वच्छंदतावादी नज़रिये का उदाहरण है | प्रेमसंबंधों पर आधारित भावना प्रवण कहानी ज्यूली ने यूरोपीय साहित्य में स्वच्छंदतवाद के परवर्ती विकास के लिए आधार का काम किया | अङ्ग्रेज़ी भाषा में स्वच्छंदतावाद का साहित्यिक आंदोलन विकसित हुआ जिसके प्रमुख हस्ताक्षरों के रूप में वेड्सवर्थ, कोलेरिज, शेल्ली और कीट्स के नाम उल्लेखनीय है |

भारत में स्वच्छंदतावाद की पहली साहित्यिक अनुगूँज बंगला में सुनाई पड़ी | आधुनिक हिन्दी साहित्य में स्वच्छंदतवाद की पहली सुसंगत अभिव्यक्ति छायावाद के रूप में मानी जाती है | हिन्दी में स्वच्छंदतवाद का प्रभाव बीसवीं सदी के दूसरे दशक में छायावादी कविता के रूप में सामने आया | डॉ. अमरनाथ के अनुसार "हिन्दी में स्वच्छंदतवाद का ज़िक्र सबसे पहले रामचन्द्र शुक्ल के विख्यात ग्रंथ हिन्दी साहित्य का इतिहास ' में मिलता है जहाँ उन्होंने श्रीधर पाठक को स्वच्छंदतवाद का प्रवर्तक करार दिया है | अमरनाथ के अनुसार छायावाद और स्वच्छंदतवाद में गहरा साम्य है | दोनों में प्रकृति प्रेम, मानवीय दृष्टिकोण, आत्माभिव्यंजना, रहस्य भावना, वैयक्तिक प्रेमाभिव्यक्ति प्राचीन

संस्कृति के प्रति व्यामोह, प्रतीकयोजना, निराशा, पलायन, अहं का उदात्तीकरण आदि के दर्शन होते हैं |"[1]

स्वच्छंदतावाद की एक प्रमुख प्रवृत्ति है प्रकृति प्रेम | कामायनी हिन्दी भाषा का एक महाकाव्य है / इसके रचयिता जयशंकर प्रसाद है | यह छायावादी युग का सर्वोत्तम और प्रतिनिधि हिन्दी महाकाव्य है | प्रसाद जी की यह अंतिम काव्य रचना 1936 में प्रकाशित हुई | 'चिंता' से प्रारंभ होकर 'आनंद' तक पंद्रह सर्गों के इस महाकाव्य में मानव मन की विविध अंतवृत्तियों का क्रमिक उन्मीलन इस कौशल से किया गया है कि मानव सृष्टि के आदि से अब तक के जीवन के मनोवैज्ञानिक और सांस्कृतिक विकास का इतिहास भी स्पष्ट होता है | कला की दृष्टि से कामायनी छायावादी काव्य कला का सर्वोत्तम प्रतीक माना जाता है | चित्तवृत्तियों का कथानक के पात्र के रूप में अवतरण इस काव्य की अन्यतम विशेषता है |

कामायनी में प्रकृति चित्रण

कामायनी काव्य की शुरुआत हिमालय से होती है | हिमालय में सर्वत्र हिम ही हिम है | उसी हिमालय के उत्तुग शिखर पर बैठनेवाले मनु के सामने भी एक तत्व की प्रधानता है | इसलिए प्रसाद कहते हैं

"एक ही तत्व की प्रधानता,
कहो उसे जड़ या चेतना |" [2]

यहाँ जड़ या चेतना को समान स्थान दिया गया है |

प्रसाद सौन्दर्य के उपासक थे | उन्होंने मानवीय सौन्दर्य के साथ साथ प्राकृतिक सौन्दर्य का भी वर्णन बड़ी सुंदरता से किया है | उनका मत है कि यह सृष्टि महा चिति से प्रेरित और संचालित है | वे मानते है कि प्रकृति और मानव में परस्पर बे जोड़ मेल है तथा मानव प्रकृति से सदैव प्रेरणा लेता है | मानव के मर्यादाहीन होते ही प्रकृति उसे सबक सिखा देती है | कामायनी के चिंता सर्ग में प्रलय का उदारण मानव – प्रकृति के असंतुलन का परिणाम है | जब जब मानव अमर्यादित होगा,उसे प्राकृत के आक्रोश का सामना करना पड़ेगा |

" द्वार बंद कर दो उनको तो अब ने यहां आने देना |
प्रकृति आज उत्पात कर रही, मुझको बस सोने देना ||[3]

प्रसाद में कामायनी में प्रकृति के विभिन्न पक्षों का चित्रण किया है | प्रकृति के आलंबन रूप, उद्दीपन रूप का वर्णन कामायनी में मिलता है | इसी तरह प्रकृति का मानवीकरण, रहस्यात्मक रूप, अलंकार रूप, प्रतीकात्मक रूप तथा उपदेशात्मक रूप भी देखा जा सकता है | प्रकृति के आलंबन रूप के अंतर्गत हिमगिरि के प्रलय, प्रान, संध्या, रात्रि, कुटीर, नदी आदि का वर्णन किया है | प्रकृति के रम्य और भयावह दोनों रूपों का आशा सर्ग में चित्रण किया है |

"स्वर्ण शालियों की कलमें थी

दूर – दूर तक फैल रही,
शरद - इन्दिरा की मंदिर की
मानों कोई गैल रही |"[4]

प्रसाद ने कामायनी में प्राकृतिक सौन्दर्य का सुंदर प्रकृति नायक और नायिका के भावों को उद्दीपक भी दिखाई गयी है | प्रसाद जी ने प्रकृति के आलंबन रूप को कम चित्रित किया है | वियोग उद्दीपन के रूप में प्रकृति वर्णन का एक उदाहरण इस प्रकार है |

" संध्या नील सरोरुह से जो
श्याम पराग बिखरते थे,
शैल – घाटियों के अंचल को
वो धीरे से भरते थे –
तरुण – गुल्मों से रोमांचित नग
सुनते उस दुख की गाथा,
श्रद्धा के सूनी साँसों से
मिलकर जो स्वर भरते थे –"[5]

कामायनी में सर्वत्र प्रकृति का मानवीकरण दिखाई देता है| प्रसाद एक छायावादी कवि थे और उसी कारण प्रकृति का मानवीकरण स्वाभाविक ही है | रात्री का मानवीकरण

[1] हिन्दी आलोचना की पारिभाषिक शब्दावली, पृ.18
[2] कामायनी, चिंता सर्ग
[3] कामायनी, चिंता सर्ग
[4] कामायनी, आश सर्ग – भाग - 1
[5] कामायनी, स्वप्न सर्ग – भाग 1

करते हुए कवि मन की उद्भावना ध्यान देने योग्य है | कवि कहते हैं कि रात्री किसी से मिलने केलिए चली जा रही है / और शायद वह देखने केलिए उत्सुकता पूर्वक घूंघट उठाती है, मुसकुराती है, और ठिठकती हुई आगे बढ़ती है |"

इस तरह प्रसाद कामायनी के आशा सर्ग में उषा को जयलक्ष्मी के समान वर्णन करते हैं "उषा सुनहले तीर बरसती, जयलक्ष्मी – सी उदित हुई "[6] इधर कवि ने प्रकृति के परागण से असंख्य उपमानों का चयन किया है | श्रद्धा केलिए कवि ने कामायनी में अनेक प्राकृतिक उपदानों का प्रयोग किया है | प्रकृति को दूती रूप, उपदेशात्मक रूप में तो चित्रित किया ही है | इसके अतिरिक्त प्रसाद ने प्रतीकात्मक रूप में भी प्राकृतिक सौन्दर्य का चित्रण किया है |

प्रसाद जी ने अपने काव्यों में प्रकृति के महत्त्व को अभिव्यक्त कर यह बताया है कि प्रकृति क्या है ? मानव जीवन पर उसका कितना व्यापक प्रभाव है ? उनके अनुसार मानव जीवन और प्रकृति एक दूसरे के पर्याय है | उनकी रचनाओं में प्रकृति के प्रति गहन चिंतन परिलक्षित होता है | कवि अपनी कामायनी में मानव जीवन की निराशा एवं प्रकृति को महत्त्व को दर्शाया है | कवि का संदेश यह है कि यदि प्रकृति का समुचित संरक्षण न किया जाया तब जो प्रकृति प्रकाश अर्थात जीवन देती है वह हताशा हो सकती है या उसे क्षति पहुंचा सकती है | अतः हमें प्रकृति के महत्त्व को समझकर पर्यावरण का संरक्षण करना आवश्यक है, जिससे जन जीवन में प्रकाश आ सके |

अतः हम निष्कर्ष के रूप में कह सकते हैं कि "कामायनी सचमुच मनुष्य की विकास यात्रा का सही दस्तावेज़ है | कामायनी में उसकी विकास यात्रा प्रकृति के प्रांगण से शुरू होती है | आगे यंत्र एवं बुद्धि चालित विकास प्रक्रियाओं से आहात एवं दम घुटकर वह पहचान लेता है कि प्रकृति के प्रांगण में आनंद तथा सहआस्तित्व का माधुर्य अनुभव करना ही वास्तविक जीवन है | प्रसाद जी ने कहा कि कामायनी महामेरु है | वह खिलौना नहीं, हल्का नहीं, वह कालजयी रचना है | उसमें हर काल के साथ संवाद करने की क्षमता है | आज के संदर्भ में कामायनी यह समझ देती है कि मनुष्य एवं प्रकृति की बीच के जैव संबंध को दृढ़ करना इस भूमि की वर्तमानता केलिए अनिवार्य है | मानव राशी को आगामी प्रलय से बचाने की सूचना बिलकुल प्रासंगिक सिद्ध होती है |"[7]

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. जयशंकर प्रसाद, कामायनी, डायमाण्ड पॉकेट बुक्स, सं . 2006
2. डॉ . अमरनाथ, हिन्दी आलोचना की पारिभाषिक शब्दावली, राजकमल प्रकशन, सं. 2009.
3. डॉ के वनजा, इको-फेमिनिज्म, वाणी प्रकाशन, सं.2013

[6] कामायनी, आश सर्ग – भाग - 1

[7] इको-फेमिनिज्म, पृ 101